International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 19-02-2026, Accepted: 22-03-2026, Published: 06-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 4-8

चन्द्रकांता की कहानियों में कश्मीरः सांस्कृतिक ऐतिहासिक पक्ष

Birendra Kisku
Department of Hindi, Visva Bharati University, West Bengal, India

सारांश
साहित्यकार अपने कृतियों में समसामयिक परिस्थितियों के साथ देश की संस्कृति, लोक जीवन व इतिहास का चित्रण करता है। साहित्यकार की जो अपनी भावभूमि होती है, ज्यादातर जिस अंचल से उसकी संवेदनाएँ व अनुभव जुड़े होते हैं, उस प्रदेश की लोक संस्कृति, लोकाचार को स्थानीय रंगों के साथ प्रस्तुत करता है। इससे साहित्य में विविध प्रदेशों प्रांतों के रीति–रिवाजों और लोक संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के अनेक आयाम खुलते हैं। साहित्यकार पाठक को विभिन्न अंचलों के लोक रंगों से परिचित भी कराता है और साहित्य को अपनी विविध वर्णी रचनाओं से समृद्ध करता है।
किसी देश की संस्कृति, सभ्यता, कला साहित्य, इतिहास दर्शन उस देश की धरोहर है, राष्ट्र समृद्धि का धोतक है। इस दृष्टि से हिन्दी के कई साहित्यकारों ने अपने कृतियों में लोक संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास, दर्शन एवं पौराणिक संदर्भो को अपने रचनाओं का आधार बनाया।
चन्द्रकांता भी उन साहित्यकारों में है, जिन्होंने अपने कहानियों उपन्यासों में कश्मीर के लोक संस्कृति, लोक जीवन, कला–साहित्य, इतिहास का मार्मिक अंकन किया। यद्यपि कि कश्मीर के बारे सैलानी दृष्टि से छिटपुट रचनाएँ की गई है। चन्द्रकांता संभवतः पहली कथाकार है जिन्होंने कश्मीर की लोकजीवन लोकसंस्कृति इतिहास का चित्रण अनुभव कश्मीरी दृष्टि से किया है।

मूल शब्दः कश्मीर, प्राकृतिक सौंदर्य, लोकसंस्कृति, लोकजीवन, सांस्कृतिक विरासत, इतिहास, ज्ञान परंपरा

मूल आलेकः कश्मीर के बारे में सोचते ही आपके मन में यह विचार या चित्र उमड़ता होगा– हिमालय की ऊँची बर्फ ढकी पहाड़ियों की गोद में दुबके झीलों, झरनों, कीकर चिनार की वनों और हरियाली के आलम से सराबोर प्रदेश। इतिहासकार कल्हण ने तो इसी प्रदेश को– 'संसार के सबसे सुंदरतम प्रदेश कहा था।' कश्मीर की प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अभिभूत मुगल सम्राट जहाँगीर के कण्ड से अनायास ही प्रशंसा के शब्द फूट पड़ते हैं– ''गर फिरदौस बर रूए जमीन अस्त, हमी अस्तो हमी अस्तों, हमी अस्त'' अर्थात् धरती में कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है यहीं है।
कश्मीर पर अब तक बहुत ही कम साहित्यिक कार्य हुए हैं, विशेषकर हिन्दी साहित्य में।

> ''कश्मीर के बारे में अधिकांश रचनाएँ सैलानी दृष्टि से लिखी रचनाएँ हैं। वहाँ या तो कृष्णचंद्रीय रोमांस है या घोर दरिद्रता या प्राकृतिक सौंदर्य का अकूत खजाना। यशपाल मोहन राकेश, भीष्म साहनी, उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे संशक्त साहित्यकारों ने जो छुटपुट रचनाएँ कश्मीर को केन्द्र में रहकर लिखी, उनमें कहीं भी समृद्ध लोक संस्कृति और लोकजीवन नहीं आया।''[1]

चन्द्रकांता संभवतः पहली रचनाकार है जिन्होंने कश्मीरी दृष्टि से कश्मीर पर कई कहानियाँ उपन्यास एवं कविताओं की रचनाएँ की है। उनकी रचनाओं में कश्मीर के लोक जीवन, लोकसंस्कृति और गौरवशाली अतीत का चित्रण हुआ है। चन्द्रकांता स्वयं भी कहती है–

> ''कश्मीर की संस्कृति तो मेरे रग रग में बसी है क्योंकि मेरी जन्मभूमि है, बचपन से लेकर युवावस्था तक मैं वहीं पली बढ़ी हूँ। मेरा व्यक्तित्व निर्माण उसी संस्कृति ने किया है तो सहजता उसमें होगी ही।''[2]

लेखिका चन्द्रकांता की नजर बहुत पारखी है इसलिए अपने कहानियों में कश्मीर की दैनिक जीवन का इति वृत्तात्मक चित्रण करती है, जिसे पढ़ने पर पाठकों के मन में चित्र उभरने लगते हैं। झेलम के किनारे बसे श्रीनगर शहर की दैनिक जीवन का चित्रण करती है –

> ''झेलम की घाटों की ओर नजर डालिए... झेलम को वितस्ता के नाम से पुकारने वाले ब्राह्मण लोग, यज्ञोपवीत हाथ में लिए गायत्री मंत्र जपते हुए सूर्यवंदन करते हुए, छुलुक छुलुक तैरते मल्लाहों के बीच मछलियाँ पकड़ते हुए मछुवे, घाटों पर कपड़े धोती और फुरसत से बर्तन माँजती औरतें। ''[3]

कश्मीर अपने कुशल और मेहनती कारीगरों के लिए प्रसिद्ध है। इस कारण चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में श्रीनगर के गलियों घूमते कलाकृति हस्तशिल्प के उत्कृष्ट नमूने प्रस्तुत करती है। चाँदी के बर्तनों में प्रादेशिक महीन हस्तकौशल कागज के घोटकर विधिपूर्वक बनाए गए पेपरमेशी के शोपीसेज, लकड़ी के खिलौने, अखरोट की लकड़ी पर बैल बूटों वाली नक्काशी, गब्बों की रंगीन कढ़ाई, कालीनों पर आँखों दुखाने वाली कलात्मक कौशल। कलाकृति के ये अनूठे नमूने स्थानीय लोगों की आजीविका का साधन है और दुनिया भर के विजिटरों को अपनी ओर आकर्षित करती है।
खानपान भी किसी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंश होता है। मनुष्य के उत्तम खानपान से न केवल शारीरिक बल एवं मानसिक संतुष्टि मिलती है, अपितु अतिश्य सत्कार भी करते हैं। कश्मीर अपने विविध स्वादिष्ट व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। साग–भात, शलगम नदः, रोगन जोश यखनी, टाउट माछ जैसे स्वादिष्ट कश्मीरी व्यंजन देखकर किसी का भी मुँह में पानी आ जाय। हिन्दु हो या मुसलमान सभी इन व्यंजनों को बड़े चाव से खाते हैं। चन्द्रकांता ने इस संदर्भ में कहा भी है –

> ''कश्मीर हिन्दु मुसलमानों की साझी विरासत रही है, उनके खानपान, रीति रिवाज इतने घुले मिले हैं कि उन्हें अलग करके देखना काफी कठिन है।''[4]

चन्द्रकांता की 'फांस' कहानी में कश्मीरी पंडितों के घाटी निष्कासन के वर्षो बाद प्रभा के पति के पुराना परिचित और पड़ोसी सनाउल्ला मिलने आता है। पति के कहने पर प्रभा ने कश्मीर का विशेष व्यंजन मोजिहा:, कड़म साग–भात बनाती है, जिसे खाकर सनाउल्ला प्रशंसा करते हुए कहता है–

> ''वाह क्या स्वाद बना है? करी मसाला डाला लगता है। कहाँ से ले आए?''[5]

कश्मीर व्यंजन का स्वाद सनाउल्ला को अपनेयन अहसास दिलाती है। इस प्रकार अच्छे खानपान से आतिथ्य सकार किये जा सकते हैं।
चन्द्रकांता की कहानियों में हिन्दु मुस्लमानों के बीच भाईचारा, प्रेम, सांप्रदायिक सौहार्द का चित्रण हुआ है। कश्मीर हिन्दु मुस्लिमों की साझी विरासत रही है। सदियों से ही हिन्दु मुस्लमानों के बीच परस्पर प्रेम, मित्रता व भाईचारा रहा है। पर्व त्योहार, शादी ब्याह हो या कामकाजी व्यापारिक निर्भरता, एक दूसरे के बिना काम नहीं बनता।

> ''अमर के घर बीसियों काम अली के वगैर पड़े रहेंगे। घर के छोटे मोटे कामों से लेकर धोबी लुहार, सुनार, कबाड़ी जिनसे रोज उसे काम पड़ता है...... वहाँ वह अली का मुहताज है.... और अली क्या नहीं जानता कि काम और व्यापार के सिलसिले में ही नहीं, कदम कदम सांस सांस में उससे जुड़ा है।''[6]

लेखिका चन्द्रकांता का अपने जन्मभूमि कश्मीर के प्रति असीम मोह है। देश–विदेश में जीवन गुजारने के बाद भी अपने स्मृतियों के सहारे कश्मीर से जुड़ी हैं–

> ''मेरे भीतर जो स्मृति के कोश है, उसका अधिकांश भाग इसी भूमि ने समृद्ध किया है। मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि मैंने अपनी जन्मभूमि से बेहद प्यार किया है। देश विदेश में घूमते रहने के दौरा थी मैं अपनी हवाओं के लिए तरसती रही हूँ।''[7]

पर्व त्योहार मनुष्य के जीवन में रंग उमंग एवं उल्लास भर देते हैं। कश्मीर में विभिन्न पर्व त्योहार मनाये जाते हैं। कहानी 'रामबिल्ले की दस्तक'' में चित्रित कश्मीर में शिव रात्रि पर्व पर एक अनूठी परम्परा प्रचलित है। शिवरात्रि के अमावस्या के दिन गृहस्वामिनी घाट पर अखरोट पूजा कर जब वह घर लौटती है, तब घर का दरवाजा गृहस्वामिनी के लिए बंद कर दिया जाता है। इसमें गृहस्वामिनी के हाथ में पानी में भीगी दो अखरोट वाली पीतल की कटोरीनुमा डोलची होती है।
गृहस्वामिनी अपनी कमर पर अखरोट से भरी घाघरी टिकाये दरवाजे पर जब दस्तक देती है। तत्पश्चात् दरवाजा खोला जाता है। गृहस्वामिनी साज श्रंगार फूलमालाओं से सजी अखरोट से भरी घाघरी कमर में टिकाये प्रवेश करती है और अपनी घाघरी से अखरोट निकालकर मिसरी के साथ सभी सदस्यों को बाँटती है। इस पर्व में रामबिल्ला को लक्ष्मी का दूत माना जाता है, जो सदैव गृहस्वामिनी के स्वर में ही बोलता है।
लेखिका चन्द्रकांता का अनुभव जगत बड़ा ही व्यापक है। अपने जीवन काल में उन्हें देश के अलग अलग राज्यों में प्रवास का अवसर मिला। पंजाब, राजस्थान, उड़ीसा तथा आंध्र प्रदेश।

> ''ऐसा होता है कि आप जहाँ रहते हैं वहाँ का वातावरण वहाँ की संस्कृति, वहाँ के लोग आपको अवश्य प्रभावित करते हैं और कहानी का पात्र बनते चले जाते हैं। हमारा अनुभव संसार को मूलतः मानवीय व्यापार के इर्द–गिर्द ही जन्मता और पनपता है।''[8]

इस प्रकार चन्द्रकांता को जगन्नाथ की पावन भूमि उड़ीसा से कथा की नायिका 'अपने अपने कोणार्क' की कुंजी मिली। कोणार्क यहाँ प्रेम और ऊर्जा का प्रतीक है।
आधुनिकता, तकनीकी विकास एवं पश्चिमीकरण ने कश्मीरी संस्कृति और लोकजीवन को बहुत हद तक प्रभावित किया। फलस्वरूप स्थानीय लोगों के विचार, मानसिकता, जीवनशैली और खानपान में बदलाव आया। सामाजिक बदलाव जीवन को सहज सरल और अधिक स्वस्थ शक्ल देने की शक्ति रखता है, लेकिन यह सभी जगह सच भी नहीं है। कहीं कहीं बदलाव पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण के रूप में आता है और इसका दुष्प्रभाव भी है। इससे सामाजिक सांस्कृतिक विघटन होता है। मूल्य, संस्कार, परंपरागत नैतिकता का ह्रास होता है। समाज में पारिवारिक विघटन बढ़ते जा रहे। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में परिणत हो रहे। आज की युवावर्ग में निजता की भावना पनप गयीं। आज के युवावर्ग व्यक्तिवादी अहम से भरे जीवन के हर अहम फैसले स्वयं लेते हैं। अपने जीवन में बुजुर्गो से किसी तरह की खलल नहीं चाहते। इस प्रकार दो पीढ़ी के बीच दूरियाँ आई।
आधुनिकीकरण के कारण अब कश्मीर में महानगरीय प्रवृति पनप रही। श्रीनगर में कई क्लब, डिस्को, बार बन गये हैं। श्रीनगर के गलियों में अब वेस्टर्न कपड़ों में युवा युवतियों को घूमते देख सकते हैं। टी0वी0 इंटरनेट, विडियो गेम्स जैसे मनोरंजन के साधन आये।

> ''बच्चे नानी–दादी से ललधट, सोन–किसरी की कहानियाँ सुनते थे, अब टी0वी0 सिनेमा ने बच्चों के रूझानों की दिशा बदल दी।''[9]

चन्द्रकांता की कहानियों में कश्मीर की प्रचलित लोक कथाओं का जिक्र है। लोक कथा, कश्मीर की समृद्ध लोक साहित्य का अभिन्न अंश है। लोक कथाओं में कल्पना की बेलगाम यात्राओं के बीच प्रेम संघर्ष और बालिदान के किस्से गूंथे होते हैं। सामान्यतः नानी दादी या परिवार का अन्य बुजुर्ग सदस्य सोनकिसरी, हीमाल नागराय, ललघट आदि आदर्श चरित्र के प्रेम बलिदान संघर्ष की कहानियों के माध्यम से बच्चों में शिक्षा, संस्कार नैतिकता के गुण वो देते हैं।
चन्द्रकांता में कश्मीर के प्राकृतिक सांस्कृतिक समृद्धि के साथ वहाँ की विरोधभास परिस्थितिक भी चित्रण किया है। कबाईलियों के घुसपैठ के बाद कश्मीर में अशांति का माहौल है। बाहरी घुसपैठिए तथा पाक परस इस्लामिक कट्टरपंथियों ने धर्म के नाम पर कश्मीरियों को अलग अलग खानों में डालकर जुदा कर दिया। इस तरह हिन्दु मुस्लमानों के बीच वैमनस्रू की खाई उत्पन्न हुई। हत्या, बलात्कार, अपहरण की घटना आम बात हो गई। अल्पसंख्यक हिन्दुओं को निशाने में लिया जाने लगा। कश्मीर की वर्तमान परिस्थिति और सांप्रदायिकता की राजनीति के प्रति चन्द्रकांता चिंतित होती है–

> ''जन्नते बेनजीर था कभी, अब तो जहन्नुम बन गया। वादी की हवा में जहर घुल गया है। हमारे बेकसूर बच्चे दिन दहाड़े, सड़कों पर लहुलुहान होते है, पेड़ों पर लटके मिलते हैं।''[10]

कश्मीरः मिथक से इतिहास तक
कश्मीर का इतिहास बहुत पुराना है, तकरीबन 5000 वर्ष पुराना माना जाता है। प्राचीन ग्रंथों में इसे 'कश्यपमार' के नाम से जाना जाता था। कश्मीर की सभ्यता का विकास नीलमतपुराण, राजतरंगिणी जैसे ग्रंथों में वर्णित है। यहाँ की सभ्यता का विकास संबंधी अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित है। नीलमत पुराण के अनुसार कश्मीर में कई सौ फीट गहरी सत्तीसर नामक झील थी।

इस झील में जलोद्भव नामक राक्षस, जिससे झील के सारे नाग आंतकित थे। सातवें मनु के समय नागकुल के गुरू कश्यपमुनि जब हिमालय के दर्शन को आये तो जलोद्भव के आतंक के बारे में पता चला। ब्रह्मा के पास शिकायत पहुँची। ब्रह्मा के आदेश पर झील को घेर लिया हालांकि जलोदभव को मारा नहीं जा सका क्योंकि उसे वरदान प्राप्त था, जब तक झील में रहेगा कोई उसे मार नहीं सकेगा। जलोद्भव से निपटने के लिए भगवान विष्णु ने अपने भाई बलभद्र को बुलाया और उसने झील के चारों ओर पहाड़ियों में छेद कर दिया जिससे पानी बह गया। इसके बाद विष्णु ने अपने चक्र से जलोद्भव की गर्दन काट दी। कश्यपमुनि अब इस सूखी घाटी में बस गये। कश्मीर का नाम पहले कश्यपमार फिर कश्मार और अंततः कश्मीर, इसी कश्यम ऋषि के सम्मान में पड़ा।

वहीं इतिहासकार कल्हण ने 'राजतरंगिणी' में कश्मीर के राजवंशों और राजाओं का प्रमाणिक दस्तावेज तैयार किया। उन्होंने अपने पहले उपलब्ध अनेक दस्तावेजो का अध्ययन कर 1184 ई0 पू0 से लेकर जयसिम्हा के 1129 ई0 तक कालानुक्रमिक इतिहास लेखन को आठ खंडों में दर्ज किया। इन खंडों को उन्होंने तरंग कहा है। कश्मीर में इतिहास लेखन की परंपरा कल्हण के बाद भी चलती रही। पंद्रहवीं शताब्दी में जोनराज ने द्वितीय राजतरंगिणी लिखकर कालानुक्रम को आगे बढ़ाया और अपने सरपस्त राजा जौनउल अब्दीन तक लेकर गये। हालांकि जैनउल अब्दीन के जीवन काल में जोनराज गुजर गये, उनका पूरा इतिहास द्वितीय राजतरंगिणी में शामिल नहीं हो पाया।

हालिया उत्खन्न में कश्मीर से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर नए तथ्य उजागर हुए। आर्कियो आर्कियोलोजिकल सर्वे के दौरान पुराने मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुए है, जिन्हें पांडवलर कहा गया। मेगालिथिक सभ्यता के कुछ अवशेष मिले हैं। जिन्हें पत्थर बने आदमी 'वटिसगोमुत्य इंसान' माना गया। कश्मीर के बुर्जहोम और गोफूकल स्थानों के आसपास अनेक मेनिहर मिले हैं, जिन्हें शापग्रस्त दुल्हा दुल्हन कहा गया। ये प्राचीन सभ्यता के अवशेष ही है। सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों से भी यह तथ्य उजागर हुआ है कि क्राइस्ट से तीन–साढ़े तीन हजार वर्ष पहले कश्मीर में बुर्जहोम और गोफूकल में सभ्यता का विकास हो चुका था।

कश्मीर के इतिहास में अनेक शासकों और राजवंशों का योगदान रहा है। कुषाण वंश्ज्ञ, गोनंद वंश कार्कोट वंश, उराल वंश, लोहार वंश, शाहमीर वंश आदि प्रमुख राजवंशों ने यहाँ शासन किया। इन राजवंशो के शासनकाल में कश्मीर ने कला, साहित्य वास्तुकला और दर्शन के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की इस दौरान कश्मीर की प्राचीन राजधानी श्रीनगर को तात्कालीन विद्वानों ने 'विद्या का केन्द्र' का कहा था।

कश्मीर में इस्लाम का आगमन

कश्मीर में बौद्ध और शैव मत के बाद इस्लाम का आगमन होता है। चौदहवीं शताब्दी के शुरूआत में रिंचनशाह के शासनकाल से कश्मीर में इस्लाम का आगमन माना जाता है। रिंचन मूलतः तिब्बती बौद्ध था, जिसने संभवतः राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्लाम स्वीकार लिया था। इस तरह धर्म परिवर्तन के बाद रिंचन सुल्तान सदर–अल–दीन कहलाया। शुरूआती दौर से लगता है कि कश्मीर में इस्लाम तलवार के दम पर नहीं आया। उस समय कश्मीर में हिन्दु शासकों का पतन हो चुका था। जनता उनके अंधाधुंध कर महँगाई, सामंती प्रभुओं के अत्याचार से परेशान थी। इसलिए रिंचन और उसके बाद के सुल्तानों के समय जब शांति और सुव्यवस्था बहाल हुई तो जनता की ओर से धर्म के आधार पर कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। सन् 1339 में शाहमीर वंश तक इस्लाम कश्मीर में वचस्वशाली धर्म बन गया था। सन् 1389ई0 में सुल्तान सिकंदर बुतशिकन का शासनकाल आया। यह कश्मीर के इतिहास का सबसे क्रुर मुस्लिम शासक अपने शासनकाल में उन्होनें हिन्दुओं पर खूब अत्याचार किया। कई मंदिरों को तोड़ा तथा लूटा, हिन्दुओं का सामूहि धर्मांतरण कराया। लेखिका चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में सुल्तान बुतशिकन का हिन्दुओं पर अत्याचार एवं धर्मातरण का जिक्र किया है–

> ''इतिहास के उस दौर में चले जाते हैं, जब कहा जाता था वादी में कुल ग्यारह घर हिन्दुओं के बचे रह गए थे। बाकी या तो मारे गए थे या धर्मपरिवर्तन हो गया था। इस कथन की सत्यता को मुस्लमानों के नाम ही प्रमाणित कर देते हैं। गुलाम मुहम्मद 'पंडित' नाजीर अहमद 'टेंग' काशीनाथ पंडित और रूपनाथ टेंग के पूर्वज क्या एक ही नहीं होंगे?''[11]

मुगलकालीन कश्मीर

सोलहवीं शताब्दी में मुगलों के आगमन के साथ कश्मीर में एक नए युग की शुरूआत हुई। मुगल समरकद और बुखारा जैसे ठण्डे और बाग–बगीचों वाले हरे भरे माहौल से आये थे। वैसा स्थान हिन्दुस्तान में कश्मीर के अलावा कोई न था। मई–जून की झुलसती दिल्ली से गए कश्मीर वह स्वर्ग था, जहाँ समरकंद को फिर से जिया जा सकता था। कश्मीर में अकबर का सबसे बड़ा योगदान था भू–राजस्व को सुधारना। सम्राट अकबर ने ही हारी पर्वत (कोह–ए–मरान) में विशाल नगर किला बनवाया था। अकबर को कश्मीर में आउसबोट शुरू करवाने का श्रेय भी जाता है।

अकबर के बाद जहाँगीर कश्मीर की खूबसूरती का सबसे बड़ा दीवान था। जहाँगीर को विशेषकर कश्मीर के बाग बगीचों के निर्माण के लिए याद किया जाता है। उसने श्रीनगर और कश्मीर के दूसरे जगहों पर सौंदर्यीकरण के कार्य किये। नूरजहाँ ने 1623 ई0 में श्रीनगर के शाह हमदान की खानबाह में भव्य और आलीशान मस्जिद बनवाई।

लेखिका चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में मुगलों द्वारा बनवाये गए बाग बगीचों की सुंदरता की खुली प्रशंसा करती है–

> ''मुगल राजाओ के शौक और कला के उत्तम नमूने, जहाँगीर का नूरजहाँ को दिया श्रेम का तोहफा शालीमार बाग, जिसमें हाथों की कुशलता के साथ प्रकृति ने ऊँचे खड़े पंक्तिबद्ध पहाड़ों की सिमिट्री से दिया।''[12]

इस प्रकार मुगलकालीन कश्मीर सांस्कृतिक समृद्ध, उन्नत और वैभवशाली था।

सांस्कृतिक धरोहर

कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यह हिन्दु बौद्ध और इस्लामी संस्कृतियों के समन्वय का अद्भूत उदाहरण है। यहाँ के मंदिर मस्जिद बौद्ध बिहार इस सांस्कृतिक समन्वय के साक्षी है। कश्मीर में कई प्राचीन मंदिर है– शंकराचार्य मंदिर अवंतिस्वमी मंदिर, मार्तंड सूर्य मंदिर, पाथर का मंदिर, तुलमुला में देवी राजा का मंदिर। इनमें आठ कोणों वाला पाथर का मंदिर वैष्णव, शैव और बौद्ध धर्म की समन्वित सभ्यता का धरोहर है। इसके अलावा हारी पर्वत में चौतरफा कई बौद्ध बिहार और मठ है। ये सभी वास्तुकला कश्मीर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिनमें 'पत्थर और लकड़ी का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया है।

इस्लामी वास्तुकला के उदाहरणों में जामा मस्जिद, हजरतबल दरगाह और शाह हमदान मस्जिद प्रमुख है। ये स्मारक कश्मीरी और मुगल वास्तुकला के सुंदर मिश्रण को प्रदर्शित करते हैं। विशेष रूप से इन इमारतों में प्रयुक्त लकड़ी की नक्काशी कश्मीरी कारीगरों की कुशलता का प्रमाण है।

ध्वस्त मंदिर, टूटी मूर्तियाँः अतीत के भग्नावशेष

कश्मीर के इतिहास में अनेक उतार–चढ़ाव आये हैं। कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्धि एवं सांस्कृतिक वैभव ने हमेशा से दुनिया को अपनी और आकर्षित किया है। निश्चय ही कश्मीर की समृद्धि देखकर विदेशी आक्रांत आकर्षित हुए। इस कारण मध्यकालीन युग में कश्मीर की धन दौलत, खजाना लूटने के लिए कई विदेशी आक्रमणकारियों ने हमले किये। इनमें अरबी मंगोल एवं अफगानी प्रमुख थे। बारहवीं शताब्दी के आरंभ में महमूद गजनवी ने कश्मीर के दक्षिणी छोर में भारी लूटपाट और धर्मातरण को अंजाम दिया मंगोलों ने दुलचा के नेतृत्व में कश्मीर पर हमले किया और महीनों तक सोना–चाँदी, खजाने लूटे मंदिरों और सांस्कृतिक धरोहरों को तोड़ो। आज भी कश्मीर में कई प्राचीन स्मारक–मूतियाँ क्षतिग्रस्त अवस्था में है। इनमें मार्तंड के ध्वस्त सूर्यमंदिर, पंडेरथन के खंडहर, अवंतिपूर मंदिर के ध्वस्त मूर्तियाँ, टूटे स्तंभ इत्यादि। लेखिका चन्द्रकांता अपनी कहानियों में इन भग्नावशेषों को रहस्यमय और रोमांचक पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करती है।

चंद्रकांता की कहानियों में ध्वस्त मूर्तियाँ, टूटे स्तंभ कश्मीर के गौरवशाली अतीत के मूक साक्षी है, मार्तड के ध्वस्त खंडहर के हैरत अंगेज शिल्प सौष्ठव को देखकर मुँह से अनायास निकल पड़ता है–

"अहा!खंडहरों में भी इतना वैभव ?"[13]

कश्मीर की ज्ञान परंपरा

कश्मीर की ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध है। कश्मीर की धरती ने अनेक महान विचारकों, दार्शनिकों, संस्कृत आचार्यो और संतों को जन्म दिया है, जिन्होंने न केवल कश्मीर बल्कि समूचे भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक परिदृश्य को प्रभावित किया। इन महापुरूषों में हिन्दु, साधु संत, विचारक, दार्शनिक, कवि, संस्कृत आचार्यो और सूफी संत शामिल थे, जिन्होंने कश्मीर की ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया। सोमदेव का 'कथा सरित्सागर' अभिनव गुप्त का 'तंत्रालोक' पंचतंत्र और जातक कथाओं की रचना भी कश्मीर में हुई है।

कश्मीर शैववाद के प्रमुख दार्शिनिक बसुगुप्त और अथिनवगुप्त ने कश्मीर शैव दर्शन को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई। उनके विचारों ने कश्मीर की आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा को गहराई से प्रभावित किया। इसी तरह कवि क्षेमेन्द्र के दशावतार, कल्हण की राजतरंगिणी जो कश्मीर के भुर्जपत्रों पर लिखी गई थी, कश्मीर के इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत माने जाते हैं।

सूफी संतों ने कश्मीर में इस्लाम के प्रसार के महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शेख नरूद्दीन जो नन्द ऋषि कहलाये, कश्मीर के सबसे प्रसिद्ध सूफी संतो में एक थे। उन्होंने हिन्दु और मुस्लमानों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया–

"अकिस मोलिस माजि है धन........... यानी हिन्दु–मुस्लमान दोनों एक ही पिता के संतान हैं। हे खुदा! दोनों का अनुग्रह करो।"[14]

मध्यकाल में लल्लेश्वरी और हब्बा खातून जैसे कश्मीरी कबयित्री हुई। इनकी रचनाएँ आज भी लोगों की वाणी में गूंजती है। लल्ली की बाकों में कबीर जैसी भक्ति भावना है–

"विं वि कोरूम सूय के अरचुम...... अर्थात् मैंने जो कर्म किए, वही मेरी अर्चना है, जीभ से उच्चारा वही मंत्र "[15]

वहीं हब्बा खातुन की बातों में स्त्री मन की व्यथा और विरूद्ध वेदना–

"लद्यो दोन पोश तंही..... अर्थात् तेरे लिए मैं अनार और जूही के फूलों की मालाएँ गुंथूंगी प्रिय! मुझसे दूर क्यों रहते हो ?"[16]

लेखिका चन्द्रकांता के कहानियों में कश्मीरी विचारकों, दार्शनिकों और संतो के प्रेम, सौहार्द और समन्वयवादी विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। कश्मीर में सांप्रदायिकता के माहौल में संदेश देती है–

"मेरा कश्मीर झीलों, झरनों और आकाश छूते पहाड़ों वाला धरती का स्वर्ग मात्र नहीं, भारतीय संस्कृति का साधना पीठ रहा है। कवि क्षेमेन्द्र का दशावतार, कवि कंठाभरण की जन्मभूमि। वहीं के भुर्जपत्रों पर कल्हथ पंडित ने राजतरंगिणी लिखी, शैव दर्शन और त्रिकवाद की भूमि, सोमानंद, अभिनवगुप्त, प्रवरसेन और बड़शाह जैनुलाब्दीन का वतन, रूपदेद, रूचदेद सूफियों और फकीरों की भूमि। विरासत में मिली भाईचारा एवं सांप्रदायिक सौहार्द, ललद्येदी का जन्म हुआ था, जिसने कहा था– शिव सर्वत्र व्याप्त है, हिन्दु मुस्लमान का भेद मत करो।"[17]

निष्कर्ष

चन्द्रकांता की कहानियों में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पक्ष व्यापक है। उन्होंने अपने अनुभव जगत को व्यापकता प्रदान करते हुए विभिन्न प्रदेश की लोक जीवन, संस्कृति, ऐतिहासिक विरासतों को वखूबी अपनी रचनाओं में वर्णित किया। लेखिका चन्द्रांकाता की दृष्टि पारखी है, पारखी इन अर्थो में, उन्हें अपने जीवनकाल में कई प्रदेशों में प्रवास का अवसर मिला। वह जहाँ भी रही वहाँ के राग रंगों में गूंथी वहाँ की कला, संस्कृति, ऐतिहासिक विरासतों को पहचाना एवं उन्हें अपनी रचनाओं का विषय बनाया। चन्द्रकांता की कहानियों में परिवेशगत अंतर है, उड़ीसा की पृष्ठभूमि पर आधारित 'अपने अपने कोणार्क' के लिए कुजी, कित्थे जाणा पुत्तर के लिए बूढ़ी, कश्मीर के परिवेशगत 'शरणागतदीनार्त' में लसपंडित को पात्र के रूप में चुना।

रचनाकार की अपनी भावभूमि होती है, ज्यादातर जिस अंचल से उसकी संवेदनाएँ एवं अनुभव जुड़ी होती उस प्रदेश की लोक संस्कृति लोकाचार स्थानीय रंगों को अपना कथाभूमि बनाता है। इस कारण चन्द्रकांता अपनी जन्मभूमि कश्मीर पर कहानियों और उपन्यासों की रचना की है।

कश्मीर को केन्द में रखकर अधिकांश रचनाएँ सैलानी दृष्टि से रची गयी है। अतः चन्द्रकांता प्रथम कथाकार है जिसने कश्मीरी दृष्टि से कश्मीर केन्द्र में रखकर रचनाएँ की। चन्द्रकांता ने कश्मीर पर आधारित रचनाओं में प्रकृति चित्रण है एवं कश्मीर का सांस्कृतिक ऐतिहासिक पक्ष थी। चन्द्रकांता की रचनाओं में सांस्कृतिक ऐतिहासिक पक्ष का चित्रण देश या राज्य के गौरव गान मात्र के लिए नहीं बल्कि कश्मीर की वर्तमान दशा को दिशा दिखाने के प्रयास के लिए किया गया।

संदर्भ सूची

1. चन्द्रकांता, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं0 (2015), पृष्ठ सं0–31
2. चन्द्रकांता, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं0 (2015), पृष्ठ सं0–61
3. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर तुतीय सं0 (2018), पृष्ठ सं0–13
4. चन्द्रकांता, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम सं0 (2015), पृष्ठ सं0–31
5. चन्द्रकांता, बदलते हालात में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–44

6. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय सं0 (2018) पृष्ठ सं0–18
7. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण (2024) पृष्ठ सं0–4
8. चन्द्रकांता, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं0 (2015) पृष्ठ सं0–16
9. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय सं0 (2018) पृष्ठ स0–68
10. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय सं0 (2018) पृष्ठ स0–109
11. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय सं0 (2018) पृष्ठ स0–64
12. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय सं0 (2018) पृष्ठ स0–14
13. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर, तृतीय सं0 (2018) पृष्ठ स0–128
14. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण (2024), पृष्ठ सं0–90
15. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण (2024), पृष्ठ सं0–88
16. चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण (2024), पृष्ठ सं0–92
17. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानुपर पृष्ठ सं0–115